इकाई 7 रूपांतरण का विकासक्रम : भारतीय तथा पाश्चात्य संदर्भ

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 साहित्य में रूपांतरण संबंधी धारणा

7.3 रूपांतरण का विकासक्रम

7.3.1 साहित्यिक एवं वाणिज्यिक संदर्भ

7.4 भारतीय सिनेमा में रूपांतरण का विकासक्रम

7.5 पाश्चात्य सिनेमा में रूपांतरण का विकासक्रम

7.6 सारांश

7.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

7.8 उपयोगी पुस्तकें

7.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- भारत में रूपांतरण की परंपरा एवं विकास के विषय में जान सकेंगे;
- पश्चिम में रूपांतरण की परंपरा एवं विकास के विषय में जान सकेंगे; और
- रूपांतरण के वाणिज्यिक संदर्भ के विषय में जान सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

एम.टी.टी. 031 पाठ्यक्रम में अभी तक अनुवाद की अवधारणा एवं आयाम के अंतर्गत अनुवाद के स्वरूप, प्रकार, महत्व, क्षेत्र, अनुवाद की प्रक्रिया व अनुवाद की चुनौतियों के विषय में अध्ययन कर चुके हैं। खंड 1 में आपने पिछले कुछ दशकों में अनुवाद अध्ययन के क्षेत्र में हुए विकास तथा अनुवाद के क्षेत्र में उभरते नए विषयों तथा शाखाओं के बारे में भी जाना। खंड 2 में आपने रूपांतरण की संकल्पना व स्वरूप तथा रूपांतरण के विविध प्रकारों एवं स्तरों के विषय में अध्ययन किया। प्रस्तुत इकाई *रूपांतरण का विकासक्रम : भारतीय तथा पाश्चात्य संदर्भ* रूपांतरण के विकासक्रम पर आधारित है। इस इकाई के अध्ययन से आप यह जानने में सक्षम हो पाएंगे कि अनुवाद के एक प्रकार के रूप में रूपांतरण क्या है और रूपांतरण के क्षेत्र में अब तक कितना विकास हो चुका है। यदि हम इसे स्क्रीन रूपांतरण के संदर्भ में देखें तो इसका एक लंबा इतिहास है। आइए, इस इकाई के माध्यम से इसका अध्ययन करें।

7.2 साहित्य में रूपांतरण संबंधी धारणा

रूपांतरण के अध्ययन में सैद्धांतिक अनुप्रयोगों के संबंध में, अनुवाद की सैद्ध ांतिकी को रूपांतरण अध्ययन पर भी लागू किया जा सकता है। चूँकि दोनों ही विधाओं में एक पाठ को दूसरी भाषा, विधा अथवा संरचना में ले जाया

जाता है। व्यवस्था (ईवान–जोहर 1978) और हैबिटस (बौर्दिआ, 1991) जैसी अवधारणाओं को, जिन्हें अनुवाद सिद्धांत में स्थान मिला है, एक सैद्धांतिक लेंस के रूप में सामने रखा गया है जिसके माध्यम से व्यापक सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ के संबंध में रूपांतरण की जाँच की जा सकती है। हालाँकि, यह सुझाव दिया गया है कि अनुवाद से प्राप्त सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि रूपांतरण पर भी लागू हो सकती है यद्यपि ऐसे प्रस्ताव अक्सर सैद्धांतिक बने रहते हैं और रूपांतरण के विशिष्ट मामलों में इन्हें लागू कम किया जाता है।

रूपांतरण के प्रमाण मध्यकाल से लेकर 21वीं सदी तक मिलते हैं जो अनुवाद एवं रूपांतरण के बीच संबंध की ओर संकेत करते हैं। 18वीं सदी तक रूपांतरण को अनुवाद के एक प्रकार के रूप में जाना जाता रहा जिसका प्रयोग अनुवादक अपनी कलात्मक प्रतिभा दिखाने के लिए करते हैं। रूपांतरण साहित्य को समृद्ध करने का काम करता है। चूँकि अनुवाद एवं रूपांतरण दोनों के साथ ही मूल पाठ की शुद्धता को बनाए रखने का सवाल जुड़ा रहा, इसलिए कभी भी अनुवाद एवं रूपांतरण पर एक स्वतंत्र इकाई के रूप में बात नहीं हो पाई। परिणामस्वरूप, अनुवाद और रूपांतरण दोनों को ही मूल की नकल समझा गया तथा कभी भी मूल जैसा सम्मान प्राप्त नहीं हो पाया। प्रस्तुत इकाई में हम 18वीं सदी तक अनुवाद एवं रूपांतरण के प्रति बनी इस धारणा की पड़ताल करेंगे तथा यह भी जानेंगे कि किन कारणों से अनुवाद तथा रूपांतरण संबंधी इस नकारात्मक धारणा में परिवर्तन आया। अनुवाद के एक प्रकार के रूप – रूपांतरण में इस प्रक्रिया के दौरान बहुत से परिवर्तन किए जाते हैं ताकि लक्ष्यपाठ में ले जाते हुए मूल की आत्मा के साथ भी अधिक छेड़छाड़ न हो। रूपांतरण के दौरान किए जाने वाले परिवर्तन हैं – जोड़ना, घटाना, व्याख्या, वर्णन, उदाहरण देकर समझाना आदि जिनका प्रयोग पाठ के रूपांतरण के दौरान यथा आवश्यक किया जाता है।

परिणामस्वरूप, अनुवाद तथा रूपांतरण के विद्वान इस प्रक्रिया में समानता अनुभव करते हैं और यह भी मानते हैं कि दोनों ही विधाओं में समाधान भी समान ही होंगे। विभिन्न विद्वानों द्वारा ऐसा अनुभव करने के पीछे कारण इन दोनों विधाओं में अंतरण की प्रक्रिया में समानता है। दोनों ही विधाओं को मूल से कमतर आँका गया तथा दोनों पर ही मूल के प्रति निष्ठावान होने का दबाव बना रहा। अगली इकाइयों में रूपांतरण के विषय में विस्तार से अध्ययन करते हुए आप अनुभव करेंगे कि विभिन्न क्षेत्रों तथा विभिन्न उद्देश्यों के लिए किए जाने वाले रूपांतरणों में अपनाई गई प्रक्रिया में कितना परिवर्तन आया है तथा उन्होंने किस प्रकार रूपांतरण को स्वतंत्र विधा के रूप में स्थान दिलाया है।

रूपांतरण का संबंध केवल पाठ से नहीं है अपितु पाठ की विभिन्न परतों में छिपे अर्थों व जटिल संदर्भों से भी है जो अर्थ संप्रेषण की प्रक्रिया में विभिन्न लक्ष्य समाजों तक विभिन्न अर्थ प्रेषित करते हैं। इस प्रक्रिया में पाठ के उचित संप्रेषण के लिए अनुवादक तथा रूपांतरणकर्ता को विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करना पड़ता है, जैसे – घरेलूकरण अथवा देशीकरण, अनुसृजन, नवसृजन, आत्मसातीकरण आदि। रूपांतरण के विभिन्न प्रकार – पाठ से पाठ, पाठ से मंच, पाठ से श्रव्य तथा पाठ से स्क्रीन रूपांतरण आदि की सहायता से विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखकर पाठ का रूपांतरण किया जाता है।

अधिकांशतः रूपांतरण को पुनर्लेखन अथवा पुनःसृजन के संदर्भ में ही देखा जाता है जो कि विकास का एक सहज एवं प्राकृतिक तरीका है। एम.बाख्तिन *Dialogic Imaginations* में उपन्यास को एक नई विधा के रूप में व्याख्यायित करते हैं जिसके अंतर्गत विभिन्न विधाओं का समावेश है। साहित्य को अब एक सीमित अथवा पृथक विधा के रूप में न देखा जाकर एक सतत प्रवाहमयी विधा के रूप में देखा जाता है जिसके भीतर विभिन्न साहित्यिक विधाएँ समाविष्ट होती जाती हैं। बाख्तिन साहित्यिक रूपांतरण को भी इसी

क्रम में एक नई विधा के रूप में देखते हैं जो साहित्य के पुनःप्रस्तुतीकरण में अधिक सक्षम व कारगर है।

अनुवाद चिंतक न्यूमार्क के अनुसार – *Translation is rendering the meaning of a text into another language in the way that the author intended the text.* (1995) अर्थात अनुवाद वस्तुतः मूल रचनाकार की इच्छानुसार स्रोतपाठ का लक्ष्यभाषा का अर्थांतरण है। जबकि नायडा तथा टेबर (1982) अनुवाद की परिभाषा में अर्थ और शैली पर ध्यान केंद्रित करते हैं तथा अनुवाद की प्रक्रिया की ओर संकेत करने के लिए पुनरुत्पादन (reproduction) शब्द का प्रयोग करते हैं। *Translation is the reproduction in a receptor language of the closest natural equivalent of the source language message, first in terms of meaning and secondly in terms of style.*

शी (2003) एक चीनी अनुवाद सिद्धांतकार के अनुसार बेहतर अनुवाद के लिए उसके सहजीकरण की आवश्यकता होती है, जिसमें स्रोत पाठ के सार के अनुरूप होने के लिए लक्ष्य पाठ के लिए आवश्यक कई परिवर्तन करना शामिल है। उनके अनुसार – *''हम मानते हैं कि अनुवाद केवल भाषायी रूपांतरण या भाषाओं के बीच अंतरण नहीं है बल्कि इसमें संस्कृति, राजनीति, सौंदर्यशास्त्र और कई अन्य कारकों के दायरे में समायोजन शामिल है''*। यद्यपि प्रत्येक पिछली परिभाषा एक विविध दुविधा से अनुवाद की प्रक्रिया को संदर्भित करती है, वे सभी इस बात से सहमत हैं कि इस प्रक्रिया में, एक तरह से या किसी अन्य में, कई परिवर्तन शामिल हैं। इन परिवर्तनों को लक्ष्य पाठ संस्कृति के अनुरूप होना चाहिए, बशर्ते कि यह स्रोत भाषा के अर्थ को विकृत न करे क्योंकि यह मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।

रूपांतरण अध्ययन में प्रारंभिक शोध का उद्देश्य यह जानना रहा है कि रूपांतरण में क्या (और कितना) स्थानांतरित किया जा सकता है। साथ ही, इस मुद्दे को अपने स्वयं के अर्थ–निर्माण संसाधनों के साथ विशिष्ट मीडिया के रूप में साहित्य और सिनेमा की क्षमताओं के अध्ययन से जोड़ा गया था। ब्लूस्टोन (1957) ने इस बात पर प्रकाश डाला कि फिल्म रूपांतरण में रूप और विषय में निश्चित रूप से अंतर शामिल होते हैं जो मीडिया के रूप में साहित्य और फिल्म के अंतर्निहित अंतर के साथ अटूट रूप से जुड़े होते हैं। कुछ साल बाद, वैगनर (1975), एंड्रयू (1976) और चैटमैन (1978) जैसे सिद्धांतकारों ने पुस्तक और फिल्म के बीच हस्तांतरणीय कथा तत्वों की पहचान करने का प्रयास किया। तब दो मीडिया को अभिव्यक्ति के दो अलग–अलग तरीकों के रूप में प्रस्तुत किया गया था, जिसने अलग–अलग वैचारिक और अवधारणात्मक रणनीतियों में हेरफेर किया ताकि अनुकूलित कथा को फिर से बनाया जा सके। अधिक विशेष रूप से, वैगनर (1975) साहित्य के अनुमानात्मक कोशल और एक काल्पनिक दुनिया के मौखिक रूप से निर्माण के माध्यम से उत्पन्न होने वाली जटिल प्रतिक्रियाओं को रेखांकित करते हैं। मनोविज्ञान और फ्रायड के स्थानापन्न संतुष्टि के सिद्धांत पर चित्रण करते हुए, उन्होंने नोट किया कि उपन्यासों के रूपांतरण एक सक्रिय मानसिक प्रयास'' (वैगनर 1975: 147) की आवश्यकता होती है, जिससे पाठक पूरी तरह से पुस्तक की कथा में डूबे रह सकते हैं और परिणामस्वरूप, आनंद ले सकते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि हचियन (2013: 126) इस बात पर भी जोर देते हैं कि साहित्य और सिनेमा के बीच मुख्य अंतर बताने और दिखाने के बीच का अंतर है: पूर्व को वैचारिक कार्य और बाद के अवधारणात्मक डिकोडिंग की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में, साहित्य शब्दों और विवरणों के क्रमिक कल्पनाशील पुनर्निर्मिति की अनुमति देता है, जो तब वर्णित वर्णों और स्थानों को एक एकीकृत रूप देता है। इसके विपरीत, सिनेमा उपन्यास से प्रेरित किसी भी अस्पष्ट रेखाचित्र को पूर्व आकार देने और रंगने से कल्पना को पूर्ववत करता है। हचियन (2013) साहित्य और

सिनेमा के बीच के अंतरों को रेखांकित करते हैं ताकि यह रेखांकित किया जा सके कि दो मीडिया दो अलग–अलग लेकिन समान रूप से अद्‌भुत अनुभव प्रदान करते हैं। वैगनर (1975) ने स्रोत उपन्यास के साथ जिस तरह से व्यवहार किया, उसके अनुसार अनुकूलन के प्रारंभिक वर्गीकरण का प्रयास किया। रूपांतरण के ये प्रकार हैं – ट्रांसपोजिशन – 'जिसमें एक उपन्यास सीधे स्क्रीन पर दिया जाता है, न्यूनतम स्पष्ट हस्तक्षेप के साथ'; कमेंट्री – ''जहाँ एक मूल लिया जाता है और या तो जानबूझकर या अनजाने में कुछ मामलों में बदल दिया जाता है'; और सादृश्य – जो 'कला का एक और काम करने की खातिर काफी महत्वपूर्ण प्रस्थान' का प्रतिनिधित्व करता है (वैगनर 1975: 222–227)।

एंड्रयू (1976) सिनेमा की आलोचना में विभिन्न युगों के अवलोकन के माध्यम से फिल्म सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जैसे कि सिनेमा में रूसी औपचारिकता, यथार्थवाद और लाक्षणिकता। अर्नहेम, ईसेनस्टीन, बालाज्स, क्राकाउर और बाजिन जैसे फिल्म सिद्ध ांतकारों का जिक्र करते हुए, एंड्रयू (1976) ने एक एकीकृत सिद्धांत पर पहुँचने का प्रयास किया कि काल्पनिक दुनिया का निर्माण (पुनः) करने के लिए सिनेमा के पास क्या है। यहाँ रूपांतरण के प्रति औपचारिकतावादी के चरम विचारों का भी उल्लेख किया गया है। उदाहरण के लिए, बालाज ने इस बात का समर्थन किया कि साहित्य की उत्कृष्ट कृतियों को शायद ही कभी सफलतापूर्वक रूपांतरित किया जा सकता है 'क्योंकि एक उत्कृष्ट कृति एक ऐसा काम है जिसका विषय आदर्श रूप से इसके माध्यम के अनुकूल है'।

साहित्य और सिनेमा में उपयोग किए जाने वाले कथा उपकरणों की बारीकियों में एक अधिक गहन परीक्षा बाद में चैटमैन (1978) द्वारा शुरू की गई, जिन्होंने कथा के उन हिस्सों के बीच अंतर किया, जिन्हें फिल्म रूपांतरण में स्थानांतरित करने की आवश्यकता होती है और जिन्हें छोड़ा जा सकता है। कथा की प्रमुख घटनाओं के बीज जो समग्र कथानक के विकास में योगदान करते हैं। रूपांतरण में मूल बीज को उसी रूप में बनाए रखा जाना चाहिए क्योंकि उनके विलोपन से कथा तक्र का विनाश होता है। दूसरी ओर, छोटी–छोटी घटनाओं, जो कि गौण प्रसंग हैं, उन्हें हटाया जा सकता है, हालाँकि उनके विलोपन से कथा की सुंदरता में कमी आ सकती है।

कभी–कभी हम चरित्र के दृष्टिकोण में शामिल बारीकियों से काफी प्रभावित होते हैं, क्योंकि इसे भौतिक, वैचारिक या कथात्मक शब्दार्थ सौंपा जा सकता है। किसी वस्तु को देखने का दृष्टिकोण अपने शाब्दिक अर्थ में अवधारणात्मक हो सकता है, जो ''किसी की आँखों के माध्यम से'' दृश्य को दर्शाता है जो आलंकारिक रूप से वैचारिक रूप से अलग–अलग अर्थों पर एक व्यापक वर्गीकरण प्रदान करता है, जिसे दृष्टिकोण कहा जाता है। यानी एक ओर किसी दृश्य को समझने और सोचने और जानने का दृष्टिकोण है, दूसरी ओर 'किसी के विश्व दृष्टिकोण के माध्यम से', या किसी के हित–सहयोग की बात करते हुए एक निष्क्रिय अवस्था का संकेत देता है।

इसी तरह, चैटमैन (1978) की तरह, मैकफर्लेन (1996) ने भी कथात्मक घटकों की जाँच की, जिन्हें रूपांतरण में स्थानांतरित करने की आवश्यकता है। बार्थेस (1966/1975) के वर्णनात्मक कार्यों के भेद को आकर्षित करते हुए, मैकफर्लेन (1996: 13–14) का तर्क है कि कार्यों और घटनाओं को उपन्यास से फिल्म में स्थानांतरित किया जा सकता है, जबकि वह उन कार्यों पर जोर देते हैं जो हस्तांतरणीय हैं। इसे ही वे रूपांतरण के रूप में परिभाषित करते हैं। वह कार्डिनल कार्यों और उत्प्रेरकों को क्रमशः कथा की प्रमुख और छोटी घटनाओं को कहते हैं। मैकफर्लेन के अनुसार, जिस हद तक कार्डिनल कार्यों को कमोबेश ईमानदारी से स्थानांतरित किया जाता है, वह रूपांतरण की सफलता के बारे में निर्णय भी ले सकता है। इसके विपरीत, उत्प्रेरक फिल्म से हेरफेर या हटाने के लिए खुद को अधिक आसानी से उधार देते हैं। उत्प्रेरक के एक उदाहरण के रूप में, मैकफर्लेन ने भोजन के लिए टेबल बिछाने का उल्लेख किया है, जो धीरे–धीरे बढ़ती कार्रवाई के लिए जमीन तैयार कर

सकता है, यानी कार्डिनल फंक्शन के लिए। मैकफर्लेन के काम ने दृष्टिकोण के मुद्दे पर भी ध्यान दिया, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, जैसा कि पहले चैटमैन (1978) द्वारा जाँचा गया था। मैकफर्लेन (1996:16) की टिप्पणी है कि सिनेमा को भौतिक दृष्टिकोण को बदलने और हेरफेर करने में अधिक लचीलापन प्राप्त है, भले ही साहित्य में पाए जाने वाले वर्णनात्मक तरीकों को फिल्म कथा में पहचानना और बनाए रखना मुश्किल हो सकता है। जब चरित्र के मनोवैज्ञानिक पहलुओं की बात आती है तो सिनेमाई उपकरणों को कम निपुणता के रूप में देखा जाता है। मैकफर्लेन (1996) और एंड्रयू (1976) के अनुसार, यह वह जगह है जहाँ कथात्मक गद्य सापेक्ष श्रेष्ठता ग्रहण करता है। सिनेमाई संकेत अटकलों या दृश्य के लिए कोई जगह नहीं छोड़ता है क्योंकि इसकी उच्च प्रतिष्ठित्ता मौखिक संकेत की तुलना में बहुत अधिक सीधे काम करती है। ब्लूस्टोन (1957) इस बात से भी सहमत हैं कि स्मृति, स्वप्न और कल्पना जैसी मानसिक अवस्थाओं को फिल्म में उतना पर्याप्त रूप से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता जितना कि भाषा में। यह मुद्दा किताब और फिल्म के बीच के अंतर से भी जुड़ा है, जिसे बाद में विस्तार से बताया गया है। घटनाओं और कार्यों के अलावा, मैकफर्लेन (1996) ने टिप्पणी की कि पात्रों से संबंधित जानकारी को फिल्म रूपांतरण में विभिन्न स्तर की निष्ठा में भी स्थानांतरित किया जा सकता है। वे सूचना देने वालों और उचित सूचकांकों के बीच अंतर करते हैं, जो दोनों पात्रों और सेटिंग से संबंधित हैं, लेकिन 'रूपांतरण के विभिन्न स्तरों का आनंद लेते हैं। बाद के वर्षों में, वोइग्ट्स–विरचो (2009) ने इसी तरह उल्लेख किया कि बुनियादी विषय और कथानक तत्व हैं जो मध्यम–स्वतंत्र हैं, और इस प्रकार उपयुक्त रूप से हस्तांतरणीय हैं। इसके अलावा, इलियट (2004: 230) ने अनुवांशिक शब्दों में रूपांतरण की अवधारणा की और टिप्पणी की कि साहित्य और फिल्म के बीच हस्तांतरणीय तत्व एक अंतर्निहित ''गहरी'' संरचना का निर्माण करते हैं जो कि पूरे मीडिया में कथायात्रा के रूप में बरकरार रहती है। इस प्रकार यह तक्र दिया जा सकता है कि मैकफर्लेन के मौलिक कार्य और मुखबिर इस गहरी संरचना का हिस्सा बनते हैं। क्या और कैसे 'ईमानदारी से' रूपांतरित किया जा सकता है, की चर्चा ने रूपांतरण विश्लेषण में अक्सर नियोजित निष्ठा विमर्श को जन्म दिया जिसके परिणामस्वरूप, रूपांतरण में निष्ठा को लेकर बहसें हुईं। इसके बाद के विचारों ने रूपांतरण से जुड़े अन्य मुद्दों के संदर्भ में निष्ठा की अवधारणा को खारिज कर दिया है।

7.3 रूपांतरण का विकासक्रम

प्रारंभिक समय से ही सिनेमा ने रूपांतरण तकनीक का प्रयोग साहित्य को बेहतर रूप से व्याख्यायित करने, साहित्य की समृद्ध परंपरा को उजागर करने तथा इसके माध्यम से सिनेमा की विधा को सँवारने तथा समृद्ध करने के लिए किया है। इसी सीखने और समृद्ध करने की परंपरा में भारत तथा विश्व के सिनेमाई पटल पर विभिन्न महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियों को आधार बनाकर फिल्में बनीं और इसी प्रक्रिया में एक स्वतंत्र विधा के रूप में सिनेमा का विकास हुआ। कालजयी उपन्यासों तथा कहानियों पर फिल्में बनाने से शुरू हुई इस प्रक्रिया का परायण पॉपुलर स्क्रिप्ट लेखन तथा कहानियों पर बनी फिल्मों में जाकर हुआ। 1990 के दशक के बाद से शुरू हुए बाज़ारीकरण तथा दृश्य–श्रव्य सामग्री के विस्फोट ने काफी हद तक साहित्य के स्थान को चुनौती दी। पॉपुलर कल्चर की शुरुआत तथा विभिन्न चैनलों के आ जाने से उच्च कोटि के साहित्य का स्थान पॉपुलर लिटरेचर ने लिया और फिल्मों आदि में भी मुख्यधारा के साहित्य के साथ–साथ पॉपुलर साहित्य की जगह बनने लगी। साहित्य को केवल पढ़े जाने की जगह देखे व अनुभव किए जाने की विधा के रूप में जगह मिली जिसके तहत साहित्य के फिल्म रूपांतरण पर ज़ोर दिया जाने लगा।

7.3.1 साहित्यिक एवं वाणिज्यिक संदर्भ

पॉपुलर कल्चर के लिए मास मीडिया एक बेहद कारगर माध्यम है जिसकी सहायता से पॉपुलर साहित्य को आमजन तक पहुँचाया जा सकता है। इसका लक्ष्य सामान्य दर्शकों को मनोरंजक साहित्य की आपूर्ति करना है। यह मनोरंजक साहित्य कविता, कहानी, उपन्यास, गीत, संगीत से लेकर चर्चित पुस्तकें, खबरें, सूचनाएँ कुछ भी हो सकता है। इस तरह देखा जाए तो पॉपुलर साहित्य आमजन का साहित्य है जिसमें उन्हें उनकी रुचि के अनुसार मनोरंजक सामग्री प्रदान की जाती है।आमजन का साहित्य होने से इसकी माँग भी अधिक होती है और इस तरह वह अर्थव्यवस्था के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके दायरे में मुख्यधारा का साहित्य, शास्त्रीय साहित्य और लोकसाहित्य – कुछ भी नहीं आता। इसका मुख्य उद्देश्य साहित्य का बाज़ारीकरण और बाज़ारीकृत साहित्य के प्रचार–प्रसार अथवा पुनःप्रस्तुतीकरण से मुनाफा कमाना है। 1990 के दशक से इस साहित्य से मुख्यधारा के साहित्य को खिसकाकर अपनी जगह बनाई। चीनी बुद्धिजीवियों जिनका साहित्य, संस्कृति तथा भाषा पर अधिकार था, वे धीरे–धीरे हाशिए पर जाने लगे और श्रेण्य का स्थान पॉपुलर साहित्य ने ले लिया। इस साहित्य ने आमजन की जीवन शैली, मूल्यों और विचारों को प्रभावित किया। धीरे–धीरे बाज़ार की माँग को देखकर उसी तरह के साहित्य और फिल्मों का निर्माण शुरू हुआ और समाज के साहित्यिक परिदृश्य में बड़ा परिवर्तन दिखाई देने लगा।

बाज़ार की माँग के अनुसार साहित्य के उत्पादन का प्रभाव फिल्मों पर भी दिखाई दिया। तथा साहित्य के वस्तुकरण की प्रक्रिया में उच्चकोटि के साहित्य का भी पुनःनिर्माण किया जाने लगा तथा उसमें पॉपुलर सामग्री, सत्यों तथा तथ्यों के साथ छेड़छाड़ कर उसे अधिक आकर्षित बनाकर पेश किया जाने लगा। पॉपुलर साहित्य की माँग व फिल्म उद्योग के बाज़ारीकरण ने फिल्म रूपांतरण को प्रभावित किया जिसके परिणामस्वरूप फिल्म रूपांतरण का बाज़ारीकरण हो गया। बॉक्स ऑफिस पर सफलता–असफलता से साहित्य का आकलन होने लगा। फिल्म रूपांतरण के केंद्रीय भाव – मनोरंजन की मान्यता ने इस पूरी विधा को प्रभावित किया।

उपन्यासों तथा कहानियों के रूपांतरण के केंद्र में आम जन की समझ तथा बोधगम्यता के आ जाने से मूल कथा के साथ यथासंभव छेड़छाड़ की जाने लगी।

7.4 भारतीय सिनेमा में रूपांतरण का विकासक्रम

बॉलीवुड में आज, साहित्यिक रूपांतरणों की सापेक्षिक कमी के बावजूद, मल्टीप्लेक्स बूम ने हाल के वर्षों में रूपांतरण के नए तरीकों को जन्म दिया है जिनका उद्देश्य दर्शकों को आकर्षित करके अधिक से अधिक मुनाफा कमाना है। दशकों से, दुनिया भर के फिल्म निर्माता महत्वपूर्ण साहित्यिक रचनाओं से प्रभावित होते आए हैं जिसके परिणामस्वरूप इन श्रेण्य रचनाओं के फिल्म रूपांतरण के उदाहरण विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों में मिलते हैं। सिनेमा में महत्वपूर्ण पुस्तकों तथा साहित्य का रूपांतरण फिल्म उद्योग के लिए भी कोई नई बात नहीं है और हमारी फिल्मों पर साहित्य का प्रभाव लगभग उतना ही पुराना है जितना कि फिल्म निर्माण का इतिहास। शेक्सपियर से लेकर रस्किन बॉन्ड तक, भारतीय सिनेमा कई साहित्यिक कृतियों से प्रेरित और रूपांतरित हुआ है। वास्तव में, भारत द्वारा बनाई गई पहली पूर्ण लंबाई वाली मूक फीचर फिल्म एक पौराणिक चरित्र राजा हरिश्चंद्र के चरित्र का रूपांतरण ही थी। तब से, भारतीय फिल्म निर्माताओं ने फिल्म निर्माण के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न पौराणिक और सामाजिक कहानियों से संदर्भ लिया है। ये कहानियाँ सीधे मिथकीय चरित्रों से भी प्रभावित हैं अथवा कालजयी रचनाओं को आधार बनाकर निर्मित हैं। हाल ही में प्रकाश झा द्वारा निर्देशित, फिल्म *राजनीति* कालजयी रचना

महाभारत को आधार बनाकर बनाई गई है।

पौराणिक कथाओं के अलावा, भारतीय सिनेमा ने शरत चंद्र चट्टोपाध्याय, रबींद्रनाथ टैगोर और बंकिम चंद्र चटर्जी जैसे लेखकों के कुछ उत्कृष्ट कार्यों का भी रूपांतरण किया है। सत्यजीत रे की कई फिल्में जिनमें *पाथेर पाँचाली, अपुर संसार* और *शतरंज के खिलाड़ी* शामिल हैं, बंगाली और हिंदी लेखकों के प्रचलित प्रभाव से बनी हैं। बाद में 1960 और 70 के दशक में, गुलशन नंदा के उपन्यास *कटी पतंग, नील कमल, खिलौना* और *शर्मीली* जैसी कई हिट फिल्मों के लिए प्रेरणा बने। तब से, साहित्यिक कृतियों से प्रेरणा प्राप्त कर तथा उन्हें आत्मसात करके कई फिल्में बनाई गई हैं। शरत चंद्र के लोकप्रिय उपन्यास *देवदास* को 7 भारतीय भाषाओं (हिंदी, उर्दू, बंगाली, तेलुगु, तमिल, मलयालम, असमिया) में 15 बार सिनेमा के लिए रूपांतरित किया गया है। इनके अतिरिक्त दो मुक्त रूपांतरण (*देव डी और* और *देवदास*) हुए हैं, और एक मूक संस्करण (1928) भी है। इनके अतिरिक्त शरत चंद्र चट्टोपाध्याय की उल्लेखनीय उपन्यासिका *परिणीता* पर भी फिल्म बनाई गई। इस कथा का हिंदी फिल्म रूपांतरण प्रदीप सरकार ने किया। यह हिंदी में निर्मित एक संगीतमय फिल्म है। 1924 में लिखी गई मुंशी प्रेमचंद की शानदार, व्यंग्यपूर्ण लघु कहानी *शतरंज के खिलाड़ी* को सत्यजीत रे ने बड़े पर्दे के लिए रूपांतरित किया। इसमें अवध के नवाब और अन्य शाही कुलीनों की सामंती प्रवृत्ति और छद्म सतता को बेहद प्रभावपूर्ण तरीके से दर्शाया गया है। *पिंजर* 1950 का पंजाबी उपन्यास है जो प्रसिद्ध कवि और उपन्यासकार अमृता प्रीतम द्वारा लिखा गया है। उपन्यास को 2003 में इसी *शीर्षक (पिंजर)* से हिंदी फिल्म में रूपांतरित किया गया था। 1977–78 में मंटो की प्रसिद्ध लघु कहानी, *टोबा टेक सिंह* पर बनी फिल्म ने यह आश्वस्त किया कि निर्देशक अच्छे साहित्य की ओर आकर्षित हो रहे हैं तथा बेहतर साहित्य को फिल्मों के माध्यम से प्रदर्शित करके साहित्य को विस्तार देने की प्रवृत्ति पुनर्जीवित होगी। इसी क्रम में फिल्म निर्माता श्याम बेनेगल ने रस्किन बॉन्ड को पत्र लिखकर उनके उपन्यास *ए फ्लाइट ऑफ पिजिंस* के सिनेमाई रूपांतरण की इच्छा ज़ाहिर की जो इस ओर संकेत करती है कि निर्देशकों में अच्छी कहानी के प्रति आकर्षण बढ़ रहा था। परिणामस्वरूप 1979 तक श्याम बेनेगल ने किताब पर आधारित '*जुनून*' फिल्म का निर्माण किया। 2011 में विशाल भारद्वाज ने बॉन्ड की लघु कहानी '*सुज़ैनास सेवेन हसबेंड्स*' को एक मनोरंजक फिल्म '*7 खून माफ*' में बदल दिया, फिल्म रूपांतरण के लिए, लेखक ने अपनी पाँच–छह–पृष्ठ की कहानी को 70–80–पृष्ठ के उपन्यास में विस्तारित किया। 1980 में लिखी गई 'द ब्लू अम्ब्रेला' हिमाचल प्रदेश की एक छोटी लड़की एक कहानी है जिसे 2005 में विशाल भारद्वाज द्वारा एक फिल्म में रूपांतरित किया गया था। गढ़वाली परिदृश्य की पृष्ठभूमि में स्थापित इस मासूम कहानी ने सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी अर्जित किया।

सिनेमा में साहित्य के कई सफल रूपांतरणों के बीच बेहद चर्चित नाम है विकास स्वरूप की फिक्शन कृति '*क्यू एंड ए*' पर आधारित ऑस्कर विजेता *स्लमडॉग मिलियनेयर*। हालाँकि फिल्म के लेखक ने कहानी को काफी हद तक बदल दिया है, फिर भी फिल्म की पूरी अवधारणा को अनुकूलित किया गया है। एक अन्य सफल फिल्म जो इसी नाम से एक पुस्तक का निष्ठापूर्ण रूपांतरण था, वह था *लाइफ ऑफ पाई*। यहाँ तक कि मीरा नायर जैसे स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं ने भी पुस्तक रूपांतरण के इस फार्मूले का प्रयोग किया और अपने काम के लिए समीक्षकों द्वारा प्रशंसित हुई। उन्होंने एक अमेरिकी भारतीय लेखक झुम्पा लाहिड़ी के पहले उपन्यास, '*द नेमसेक*' को एक फीचर फिल्म में बदलने के लिए प्रशंसा प्राप्त की। यह फिल्म तब्बू और इरफान खान द्वारा अभिनीत एक बंगाली जोड़े के इर्द–गिर्द घूमती है, जो अमेरिकी जीवन शैली के साथ चलने के लिए संघर्ष करते हैं। एक उपन्यास को दो घंटे की फिल्म में बदलना अपने आप में एक बड़ी चुनौती

है। कभी–कभी, कहानी को फिल्म के अनुरूप समायोजित करने व समय की अवधि के अनुकूल बनाने के क्रम में मूल रचना की प्रभावोत्पादकता पर असर पड़ जाता है। इसी कारण कई फिल्म रूपांतरण ऐसे भी हुए हैं जिन्होंने साहित्य के कुछ प्रसिद्ध कार्यों से प्रेरित होने के बावजूद बॉक्स–ऑफिस पर सफलता प्राप्त नहीं की। हालाँकि, अभी भी कुछ क्लासिक्स हैं जिन्हें आलोचकों और दर्शकों दोनों ने अपनाया है।

7.5 पाश्चात्य सिनेमा में रूपांतरण का विकासक्रम

उपन्यास और फिल्में इतनी अलग प्रजातियाँ हैं कि उनमें संगम बैठाना अप्राकृतिक लग सकता है। रूपांतरण के बाद उनमें समानता के बिंदु केवल कथातत्व, सेटिंग तथा पात्र के स्तर पर ही मिलेगी। कई बार तो रूपांतरण में इस स्तर पर भी परिवर्तन देखे जाते हैं। उपन्यास स्वयं में एक पूर्ण कला रूप है। एक लेखक किताब लिखता है, और एक पाठक एक समय में एक किताब पढ़ता है। यदि यह एक सफल पुस्तक है, तो बहुत से लोग, यहाँ तक कि लाखों लोग भी उसी पुस्तक को पढ़ेंगे। यद्यपि प्रत्येक पाठक अथवा सहृदय कहानी को अपनी कल्पना और व्यक्तिगत व्याख्या के माध्यम से देखेगा किंतु मुद्रित शब्द में कोई बदलाव नहीं आएगा।

मूल रचना पर आधारित स्क्रीनप्ले तक बहुत सीमित लोगों की पहुँच होगी। पटकथा में पूर्व से पश्च–निर्माण तक, निर्देशक और रचनात्मक टीम के बीच सहयोग से बहुत सारे बदलाव आते हैं। पटकथा एक तरल और हमेशा विकसित होने वाला दस्तावेज है। किसी उपन्यास को किसी फिल्म में बदलना एक घर का नवीनीकरण करने जैसा हैः इसे फिर से किसी सुंदर चीज में बनाने से पहले आपको इसे फिर से देखना तथा परिवर्तन करना होगा। एक फिल्म के लिए उपन्यास को रूपांतरित करने में चुनौती यह है कि जब आप इसे फिल्म के माध्यम में मोड़ने के लिए आगे बढ़ते हैं तो स्रोत के प्रति निष्ठावान कैसे रहें। पहली बात जिस पर विचार करना चाहिए, वह है गद्य को नाटकीय लेखन और पटकथा प्रारूप की सीमाओं के अनुकूल बनाना। एक फिल्म निर्माता या पटकथा लेखक के साहित्यिक कार्य को फिल्म के अनुकूल बनाने में बड़े बदलाव करने के तीन मुख्य कारण हैं। पहला है, फिल्म की रूपांतरण प्रक्रिया के तहत नए माध्यम की माँग। कथा संरचना में हेरफेर करने के लिए फिल्म और साहित्य में से प्रत्येक के पास अपने स्वयं के उपकरण हैं। एक उपन्यास में, एक नया अध्याय हमें कथा में एक अलग समय और स्थान पर वापस ले जा सकता है। एक फिल्म में, हम एक फ्लैशबैक, एक क्रॉसकट, या एक भंग के उपयोग के माध्यम से उसी समय और स्थान पर वापस जा सकते हैं, जैसे कि *वुथरिंग हाइट्स* में फिल्म निर्माता जटिल कथा को सुसंगत रखने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हैं। रूपांतरण की समस्याएँ और भी कठिन हो सकती हैं। *द डायरी ऑफ ऐने फ्रैंक* के साथ काम कर रहे फिल्म निर्माताओं ने, जो कि बाइबिल के बाद, दुनिया में सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली किताबों में से एक है, ने महसूस किया कि अगर उन्हें ऐनी जैसी प्रिय तथा मासूम चरित्र को फिल्म में पुनर्जीवित करना है तो उन्हें हल्के ढंग से चलने की जरूरत है। किसी कालजयी कृति के रूपांतरण में प्रत्येक रूपांतरणकर्ता अथवा निर्देशक के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यही होती है कि उसे समकालीन दर्शकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए किसी प्रकार पुनःसृजित किया जाए।

1962 में हार्पर ली के क्लासिक व पुलित्जर पुरस्कार से सम्मानित उपन्यास *टू किल ए मॉकिंगबर्ड*, का रूपांतरण, ली द्वारा पुस्तक में सृजित चतुर चरित्र कार्य पर केंद्रित है। एटिकस फिंच, स्काउट, और बू रेडली को जीवन में लाकर और उपन्यास की धीमी गति से जलने वाली साजिश संरचना का पालन करते हुए, फिल्म पुस्तक के दो सबसे मजबूत तत्वों को एक फिल्म में केंद्रित करती है। *द गॉडफादर* (1972, 1974), मारियो पूजो का उपन्यास एक अवशोषित, डार्क थ्रिलर है जो रोमांचित करता है, भयभीत करता है और

साथ ही मनोरंजन भी करता है। उपन्यास से रूपांतरित पहली दो फिल्मों में फ्रांसिस फोर्ड कोपोला ने घिनौनी कहानी को ऑपरेटिव विजय में बदल दिया, जिसे कुछ लोग अब तक की सबसे अच्छी फिल्मों में से दो मानते हैं। दोनों ही फिल्मों ने सर्वश्रेष्ठ चित्र और सर्वश्रेष्ठ रूपांतरित पटकथा के लिए ऑस्कर जीता। *लिटिल वुमन* (2019) ग्रेटा गेरविग ने लुइसा मे अल्कोट के कालजयी उपन्यास (*स्पॉइलर टू फॉलो!*) के अपने रूपांतरण के साथ कुछ उल्लेखनीय किया। गेरविग यह कल्पना करके कहानी में एक रोमाचंक मोड़ जोड़ता है कि 'जो' वास्तव में उपन्यास लिटिल वुमन का लेखक है। कहानी में इस रचनात्मक मोड़ के आ जाने से कहानी न केवल अधिक रोचक और आकर्षक हो जाती है अपितु इस मूल कथा में एक मामूली से परिवर्तन से कहानी की मूल वस्तु भी प्रभावित नहीं होती और उसमें एक नवीनता और ताज़गी भी आ जाती है। कलर पर्पल (1985), स्टीवन स्पीलबर्ग ने एलिस वाकर के उपन्यास का एक निष्ठापूर्ण रूपांतरण बनाया जो अपने मूल कथानक और चरित्र दोनों के संदर्भ में उपन्यास के प्रति पूर्णतः वफादार है। यह एक सच्ची उपलब्धि है क्योंकि स्पीलबर्ग अपने प्रदर्शन के माध्यम से भावनात्मक सामग्री को व्यक्त करने के लिए अपने अभिनेताओं पर निर्भर हैं, जबकि उपन्यास में हम सेली के आंतरिक विचारों और भावनाओं के बारे में जानते हैं। कलाकारों के अभूतपूर्व प्रदर्शन ने इस फिल्म को एक बेहद उल्लेखनीय फिल्म बना दिया। 1939 में निर्मित *द विजार्ड ऑफ ओज* का रूपांतरण स्रोत सामग्री के प्रति अपेक्षाकृत वफादार रूपांतरण है। यह हमारी साझा सिनेमाई चेतना का इतना शक्तिशाली हिस्सा है क्योंकि यह एल. फ्रैंक बॉम की कल्पना को फिल्म के माध्यम से मूर्त रूप प्रदान करता है। आठ दशक बाद भी इस फिल्म को अपनी प्रस्तुति के लिए भूलना मुश्किल है। यह फिल्म उस समय के दर्शकों के लिए बेहद अद्भुत रही। रंग में सराबोर, फिल्म का हर फ्रेम के अपनी अनुभूति में अद्भुत है। कई बार देखे जाने के बावजूद भी यह फिल्म हर बार कुछ नया अनुभव दे जाती है। यह समृद्ध दृश्य दृष्टिकोण उपन्यास के रमणीय स्वर को और चमक देता है। जेन ऑस्टन के उपन्यास *सेंस एंड सेंसिबिलिटी* (1995) के एम्मा थॉम्पसन द्वार किए गए स्क्रीन रूपांतरण को एंग ली द्वारा निर्देशित किया गया जिसमें एंग ली ने कई पात्रों को सूक्ष्म लेकिन प्रभावी तरीके से बदला है जिससे मूल पुस्तक के प्रभाव और तनाव को बनाए रखते हुए आधुनिक संवेदनाओं को अधिक आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। परिणामस्वरूप सर्वश्रेष्ठ रूपांतरित पटकथा के लिए थॉम्पसन को ऑस्कर पुरस्कार से नवाज़ा गया और साथ ही उपन्यास के सर्वश्रेष्ठ रूपांतरण की श्रृंखला में एक और फिल्म जुड़ गई। *फॉरेस्ट गंप* (1994), ने सर्वश्रेष्ठ फिल्मांकन सहित छह ऑस्कर जीते। उपन्यास रूपांतरण की दृष्टि से यह एक उल्लेखनीय फिल्म है। इस फिल्म में एक मजबूत कथा को आधार बनाया गया और उससे एक महत्वाकांक्षी और रचनात्मक दृश्य कहानी बनाई। विंस्टन ग्रूम का उपन्यास टॉम हैंक्स द्वारा चित्रित सुव्यवस्थित चरित्र की तुलना में गहरा और अधिक नैतिक रूप से जटिल है, लेकिन 20 वीं शताब्दी के एक विशाल दौरे के पक्ष में उस जटिलता को बढ़ाना इस फिल्म की शक्ति और आकर्षण की कुंजी है। *हैरी पॉटर* (2002–2011) फिल्म श्रृंखला में चार निर्देशक और दो क्रेडिट पटकथा लेखक हैं, और आठ फिल्मों में बँटी होने के बावजूद, निर्देशक को जे.के. रॉलिंग की कथा को संपादित करना पड़ा। लेकिन फिल्में कथानक और चरित्र विकास दोनों के लिए बहुत वफादार हैं, जो रॉलिंग की सच्ची लेखन प्रतिभा की ओर संकेत करती है। फिल्म का विकास भी कहानी की तर्ज पर ही है जहाँ बच्चों की काल्पनिक कहानियों से शुरू होकर फिल्म एक अधिक जटिल तथा गंभीर कथानक में तब्दील होती जाती है। जे.के. रॉलिंग रचित *हैरी पॉटर* के अंतिम भागों में इस कथा को देखा जा सकता है। ये प्रशंसकों के लिए आदर्श रूपांतरण हैं जो अविश्वसनीय सामग्री को देखने के अलावा और कुछ नहीं चाहते हैं। चार्ल्स डिकेंस को स्क्रीन पर अनुवाद करना हमेशा एक चुनौती भरा काम है। उनकी पुस्तकें लंबी हैं, उनमें बहुसंख्यक मोड़ हैं, और अक्सर संरचना में क्रमानुसार होती हैं। लेकिन डेविड लीन के 1946 के *ग्रेट एक्सपेक्टेशंस* के रूपांतरण को अभी भी बहुत महत्व दिया जाता है, यहाँ तक

कि वर्षों बाद भी डेविड लीन की स्क्रिप्ट किसी भी तरह बिना कुछ खोए कहानी और पात्रों को दो घंटों में समेटने और बाँधने में सक्षम है। सात दशक से भी अधिक समय बाद, फिल्म आधुनिक प्रतीक होती है। इस फिल्म की विशेषता यह भी है कि इसकी पटकथा मूल कथा के प्रति वफादार भी है। द डेविल वियर्स प्रादा (2006), मिरांडा प्रीस्टली सिनेमाई इतिहास के महान खलनायकों में से एक है। लॉरेन वीसबर्गर के उपन्यास – जिसे इसके पूरा होने से पहले ही चुना गया था – एक बहुत ही अलग भावनात्मक नोट पर समाप्त होता है, लेकिन फिल्म मिरांडा के चरित्र को और अधिक गढ़ती है और कहानी को एक अलग मोड़ पर खत्म करती है। *द लॉर्ड ऑफ द रिंग्स* (2001–2003), पीटर जैक्सन की फिल्मों की त्रयी जे.आर.आर. टॉल्किन के क्लासिक महाकाव्य फंतासी उपन्यासों से व्यापक अर्थों में न्याय करती प्रतीत होती हैं। जैक्सन ने कहानी को काफी हद तक सुव्यवस्थित किया, लेकिन कुछ लोगों ने वहाँ पर्याप्त टॉम बॉम्बाडिल नहीं होने की शिकायत की जो जे.आर.आर. टॉल्किन के उपन्यासों में अधिक प्रभावकारी रूप से दिखाई देता है। स्टीफन किंग के उपन्यास *रीटा हेवर्थ* और शशांक रिडेम्पशन के *फ्रैंक डाराबोंट* के 1994 के रूपांतरण सिनेमा का एक आधुनिक क्लासिक है, जो प्रतीकात्मकता से समृद्ध फिल्म है जिसे विभिन्न तरीकों से व्याख्यायित किया जा सकता है। यह अपने स्रोत के प्रति विशेष रूप से वफादार नहीं है। किंग ने खुद नहीं सोचा था कि कहानी एक फीचर–लेंथ फिल्म हो सकती है, लेकिन डाराबोंट ने कहानी की भावना को खोए बिना कथानक और कुछ पात्रों का विस्तार किया। परिणामस्वरूप यह एक ऐसी फिल्म के रूप में सामने आती है जो दिखाती है कि कैसे एक फिल्म बनाने की सहयोगी प्रक्रिया कभी–कभी इसके भागों के योग से अधिक हो सकती है। कॉर्मैक मैकार्थी हमारे महान उपन्यासकारों में से एक हैं, और *नो कंट्री फॉर ओल्ड मेन* (2007) वास्तव में उनके अधिक सुलभ कार्यों में से एक है जो अच्छाई, बुराई के विषयों की खोज करती प्रतीत होती है और संभावना है कि वे अर्थहीन भेद हैं। कोएन बंधु उपन्यास के प्रति बहुत वफादार हैं – इतने वफादार, वास्तव में, कि हमें निश्चित रूप से पहले किताब पढ़नी चाहिए। अन्यथा, फिल्म का प्रत्येक दृश्य आपके मस्तिष्क में एक छवि के रूप में बैठ जाएगा और आप पाठ का स्वतंत्र अध्ययन नहीं कर पाएँगे। देखा जाए, तो यह एक फिल्म की सफलता ही है जो दिखाती है कि उन छवियों को कितनी खूबसूरती से बनाया गया है।

7.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने जाना कि अनुवाद के एक प्रकार के रूप में रूपांतरण की विकास प्रक्रिया क्या है। साथ ही आपने जाना कि साहित्य के विस्तार के लिए भारतीय तथा पाश्चात्य सिनेमा में रूपांतरण का एक तकनीक के रूप में प्रयोग लंबे समय से किया जा रहा है। यदि यह कहा जाए कि फिल्म निर्माण के प्रारंभिक दौर में फिल्मों ने उच्च कोटि के साहित्य से सीखा व प्रेरणा प्राप्त की तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वस्तुतः साहित्य इस दृष्टि से फिल्म निर्माण में बेहद सहायक रहा। इसी के चलते, उच्च कोटि की साहित्यिक रचनाओं पर प्रचुर मात्रा में फिल्मों का निर्माण किया गया। पश्चिम से लेकर विश्व के विभिन्न देशों तथा भारत में भी इसकी एक लंबी व समृद्ध परंपरा देखी जा सकती है। प्रस्तुत इकाई में हमने रूपांतरण के विकासक्रम पर बात करते हुए पश्चिम तथा भारतीय सिनेमा की विस्तृत चर्चा की जिसके माध्यम से फिल्म तथा साहित्य के परिदृश्य में आ रहे बदलावों को भी रेखांकित किया गया। आपने देखा कि बाज़ार तथा मुनाफे से जुड़ जाने के कारण फिल्म निर्माण में अधिक आकर्षक सामग्री को महत्व देने की शुरुआत हुई। लेकिन उच्चकोटि का साहित्य तथा कालजयी साहित्य का सिनेमा में सदा महत्व बना रहा। स्क्रीन रूपांतरण के इस संक्षिप्त इतिहास के माध्यम से रूपांतरण के विकासक्रम का अनुमान लगाया जा सकता है तथा यह भी देखा जा सकता है कि

रचनाकार तथा रचना की प्रतिष्ठा, निर्देशक का अपना दृष्टिकोण तथा बाज़ार की माँग आदि ऐसे विभिन्न आयामों के चलते रूपांतरण के स्वरूप तथा पद्धतियों में भी अंतर देखने को मिलता है। कहीं रूपांतरण मूल रचना के प्रति अधिक वफादार होते हुए दृश्य–श्रव्य साहित्य की तरह दिखाई देता है तो कहीं वह मूल रचना के कथानक अथवा ट्रीटमेंट तथा सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश में परिवर्तन कर उसे अधिक प्रभावकारी बनाने का प्रयास करता है।

अनुवाद की ही तरह रूपांतरण में निष्ठापूर्ण रूपांतरण, भावानुवाद, पुनःसृजन, नवसृजन आदि विभिन्न आयाम देखे जा सकते हैं जिन्हें प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक हैं।

7.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. क्या अनुवाद तथा रूपांतरण एक–दूसरे से भिन्न विधाएँ हैं?
2. अनुवाद के एक प्रकार के रूप में रूपांतरण की चर्चा कीजिए।
3. भारतीय संदर्भ में रूपांतरण के विकासक्रम पर प्रकाश डालिए।
4. पाश्चात्य संदर्भ में रूपांतरण के विकासक्रम पर प्रकाश डालिए।
5. रूपांतरण के वाणिज्यिक संदर्भ से क्या तात्पर्य है?
6. कुछ हिंदी उपन्यासों एवं उनके रूपांतरणों की चर्चा कीजिए।
7. कुछ भारतीय उपन्यासों एवं उनके रूपांतरणों की चर्चा कीजिए।
8. शेक्सपीयर के नाटकों के हिंदी फिल्म रूपांतरण की चर्चा कीजिए।
9. रस्किन बॉड की रचनाओं के हिंदी फिल्म रूपांतरण की चर्चा कीजिए।
10. देवदास के विभिन्न रूपांतरणों तथा उनके विभिन्न आयामों की विवेचना कीजिए।

7.8 उपयोगी पुस्तकें

- Stam, Robert (Editor), Alessandra Raengo (Editor)Literature and Film: A Guide to the Theory and Practice of Film Adaptation.
- Brian, MCFARLANE. Novel to film: an introduction to the theory of adaptation.
- Hutcheon, Linda, A Theory of Adaptation, Routledge.
- Krämer, Lucia, Adaptation in Bollywood, The Oxford Handbook of Adaptation Studies.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY